

## भारत में चीत्तो की कहानी: कल आज और कल

डॉ.अजय नायक<sup>1</sup>, डॉ. आशीष मीणा<sup>2</sup>, डॉ. रितेश लिम्बात<sup>2</sup>

<sup>1</sup>सहायक प्राध्यापक ,लाइवस्टोक प्रोडक्शन मनेजमेंट

<sup>2</sup>सहायक प्राध्यापक ,पशुचिकित्सा रोग विज्ञान

एम्. बी. वेटेरिनरी कोलेज डूंगरपुर राजस्थान

<https://doi.org/10.5281/zenodo.10395831>

ऐतिहासिक रूप से, चीते पूरे अफ्रीका और दक्षिण-पश्चिमी एशिया में पाए जाते थे। वे अफ्रीका से लेकर अरब प्रायद्वीप तक, फिर पूर्व में ईरान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान से होते हुए भारत तक फैले हुए थे। एशिया में पाए जाने वाले चीतों को एशियाई चीतों के रूप में वर्गीकृत किया गया था। एशियाई चीता को अफ्रीकी चीते से छोटा माना जाता था, लेकिन उसकी गर्दन अधिक शक्तिशाली और पैर लंबे होते थे। इस कारण से, ऐसी धारणा है कि एशियाई चीते अफ्रीकी चीतों की तुलना में तेज़ होते हैं, हालाँकि इस दावे का समर्थन करने के लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। अपने मांसल लंबे पैरों, अतिरिक्त ऑक्सीजन सेवन के लिए बड़ी नासिका और ऊंची आंखों के साथ, चीता सबसे तेज़ भूमि स्तनपायी होने का गौरव प्राप्त करता है। वे कम दूरी पर 60 या 70 मील प्रति घंटे की रफ़्तार तक पहुँच सकते हैं, लेकिन उसको कहा पता था की यह विशेषता भारत में उनके विनाश का कारण बनेगी।

16वीं शताब्दी के दौरान, भारत में 10,000 से अधिक एशियाई चीते रहते थे। चीतों को वश में करना अपेक्षाकृत आसान था, इसलिए उन्हें प्रशिक्षित किया गया और पालतू बनाया गया। उन्हें कुत्तों की तरह ही पट्टे पर बांध कर रखा गया था। एक जंगली चीते को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया में तीन से चार महीने लगते थे। अंततः, जानवरों का उपयोग शाही शिकार के लिए किया गया। अन्य जानवरों का शिकार करने के लिए जंगली चीतों का उपयोग करना और राजा जिसे शिकार कहते थे , मुगल साम्राज्य के दौरान यह शिकार व्यापक हो गया, खासकर सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान। बताया जाता है कि सम्राट के भोजनालय में



लगभग 9,000 चीते थे। हालाँकि, शिकार के लिए जंगली चीतों को पकड़ने से उनकी आबादी पर असर पड़ रहा था। एक और समस्या थी चीते कैद में प्रजनन करने की क्षमता बहुत कम होने लगी थी इसलिए, उनकी जनसंख्या वृद्धि और भी सीमित हो गई।

16वीं शताब्दी में सम्राट जहांगीर के समय में सबसे पहले चीते को सफलतापूर्वक कैद में प्रजनन किया और बच्चे हुए। लेकिन जैसे-जैसे चीतों को जंगल से निकाला जाने लगा, धीरे-धीरे भारत में उनकी संख्या कम होती गई। अंग्रेजों के आगमन के साथ, चीता का भाग्य तय हो गया। वे बाघ और हाथियों जैसे बड़े शिकार का शिकार करने में अधिक रुचि रखते थे। चीता भी सीमा से बाहर नहीं था। अंग्रेजों चाय और कॉफी के बागानों के लिए वनों में चीतों के आवासों को भी साफ़ कर दिया,। इसलिए, बड़ी बिल्लियों सहित कई जानवरों का निवास स्थान खतरे में पड़ गया। ऐसा कहा जाता है कि ब्रिटिश सरकार चीते को कीड़े-मकौड़े जैसा मानती थी और उस पर इनाम भी रखती थी। विशेषज्ञों का मानना है कि इनामी शिकार के कारण संभवतः भारत में जानवरों की संख्या में गिरावट आई है। इस बीच, भारतीय अभिजात वर्ग और शासकों ने शिकार के लिए चीतों का उपयोग करना जारी रखा।

1947 में, जिस साल भारत को इंग्लैंड से आजादी मिली, उसी साल मध्य प्रदेश में एक महाराजा ने भारत के आखिरी तीन चीतों को गोली मारकर हत्या कर दी। ऐसा माना जाता है कि ये भारत के आखिरी बचे हुए जंगली चीते थे।

1952 में, चीता को आधिकारिक तौर पर विलुप्त घोषित कर दिया गया था। 1970 के दशक में, तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के आदेश पर, भारत ने ईरान के शाह से अनुरोध किया कि एशियाई शेर के बदले में चीतों को भारत में आयात किया जाए। यह प्रतिक्रिया सकारात्मक थी किन्तु अयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में 1979 की ईरानी क्रांति के दौरान शाह को बेदखल कर दिया गया था। अगले कुछ वर्षों तक, ईरान में वन्यजीव संरक्षण का काम पटरी से उतर गया। रेगिस्तानी प्रजातियाँ कम होती गईं, चीते पहाड़ी आवासों में स्थानांतरित हो गए जहाँ वे मानव उत्पीड़न से भी बच सकते थे। इस प्रकार, चीता विश्वसनीय शिकार के साथ दूरदराज के इलाकों पर निर्भर होकर, अपनी कई पूर्व सीमाओं से गायब हो गया। आज, एशियाई चीता को आधिकारिक तौर पर विलुप्त घोषित कर दिया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस की स्थापना 2010 में डॉ. लॉरी मार्कर द्वारा की गई थी। डॉ. मार्कर ने चीता संरक्षण की आवश्यकता को पहचानते हुए, विश्व स्तर पर इन उल्लेखनीय प्राणियों का जश्न मनाने और उनकी रक्षा करने के लिए 4 दिसंबर को एक दिन के रूप में चुना।



17/09/2022 को माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर 5 चीते कुनो राष्ट्रीय उद्यानमें लाये उसके बाद 18/02/2023 को दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया से लगभग 12 चीतों को भारत के कुनो राष्ट्रीय उद्यान में लेकर आ गए। यह पहली बार है कि एक बड़े मांसाहारी को जंगल में फिर से लाने के लिए एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में स्थानांतरित किया गया है। तो, आखिरी चीतों के मारे जाने के 50 से अधिक वर्षों के बाद, दुनिया का सबसे तेज़ स्तनपायी भारत में वापसी करने के लिए तैयार है।

अभी कुनो राष्ट्रीय उद्यानमें चीतों का संवर्धन भी हो रहा है और माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्रमोदी द्वारा नए जगह पर और चीतों को लाने की कवायत हाथ धरी है उसमे गुजरात के बन्नी ग्राश्लैंड में चीतों को रख सकते है।

अब धीरे धीरे अपने भारत में दुनिया का सबसे तेज स्तनपायी वापसी कर रहा हे ओर अच्छी नीतियों के कारण जल्द ही भारत में चीतों की तादर बड जायेगी।

